डेट फंड में अधिक रिटर्न और कम जोखिम का संतुलन

हर्षेन्दु बिंदल, प्रेसिडेंट, फ्रैंकलिन टेम्पलटन इन्वेस्टमेंट्स(इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

डेट म्यूचुअल फंड में दो प्रमुख कारक हैं- वेरायटी और ल़हूलियत। वेरायटी के लिहाज से डेट फंड निवेश सीमा और जोखिम उठाने की क्षमता में उपलब्ध होते हैं। इसके मुताबिक इन्हें अल्पकालिक और दीर्घकालिक डेट फंड में वर्गीकृत किया जा सकता है।

अल्पकालिक निवेश सीमा के लिए निवेशक द्वारा लिक्विड फंड (3-6 महीने), अल्ट्रा शॉर्ट टर्म डेट फंड (एक वर्ष से कम) और अल्पकालिक डेट फंड (3 वर्ष से कम) में से चयन किया जा सकता है। आपकी निवेश सीमा यदि 3 वर्ष से अधिक है, तो आप इनकम और गिल्ट फंडों में से चुनाव कर सकते हैं।

जोखिम के आधार पर, आपको ब्याज दर जोखिम और क्रेडिट रिस्क पर विचार करना चाहिए। उच्च प्रतिफल निवेशकों के लिए मायने रखता है फिर चाहे एफडी हो या डेट फंड। सरकारी बॉन्ड 1-10 वर्ष के बॉन्ड में 7.44-7.77 प्रतिशत का प्रतिफल देते हैं (11 सितंबर, 2015)। इन प्रतिफलों को पीछे छोड़ने के लिए निवेशक को कॉर्पोरेट बॉन्ड में निवेश करना चाहिए।

अगर हम सहूलियात की बात करें तो सभी म्यूचुअल फंड बेहद लिक्विड (फिक्स्ड मैच्युरिटी प्लान या एफएमपी जैसे बंद अवधि वाले म्यूचुअल फंड को छोड़कर) होते हैं, जिसमें निवेशक एग्जिट लोड यदि लागू हो, के साथ सभी कारोबारी दिवसों में यूनिट रिडीम करा सकता है। निवेशक 500 रुपये की मासिक सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान या सिप से भी शुरुआत कर सकते हैं।